विचार बिन्दु

जहाँ चक्रवर्ती सम्राट की तलवार कुंठित हो जाती है, वहाँ महापुरुष का एक मधुर वचन ही काम कर देता है। –हरिऔध

भारत के सर्वाधिक चर्चित मुख्य न्यायाधीश डॉ. डी. वाई. चंद्रचूड़

भारत के 50 वें मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर डी वाई चंद्रचूड़ 10 नवंबर 2024 को अपने पद से सेवानिवृत होंगे। उनके पद भार ग्रहण करने पर मैंने इसी स्तंभ में एक संपादकीय लिखा था जो 15 नवंबर 2024 को प्रकाशित हुआ। उनसे देश को क्या अपेक्षाएं हैं, इसका का विस्तार से उल्लेख इस संपादकीय में किया गया था। यह आशा की गई थी कि वह देश के नागरिकों के संविधान प्रदत्त अधिकारों की रक्षा करने वाले एक निर्भीक और निष्पक्ष न्यायाधीश के रूप में अपना नाम इतिहास में अंकित कराएंगे।

अब जब वह सेवा निवृत हो रहे हैं, तो यह उपयुक्त अवसर है जब उनके कार्यकाल का एक निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाए और यह समझने का प्रयास किया जाए कि वे उनसे की गई अपेक्षाओं पर कितने खरे उतर पाए हैं।

उनके दो वर्ष के इस कार्यकाल से, यह तो निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया है कि डॉक्टर चंद्रचूड़ न केवल एक निष्णात विधि वेत्ता हैं, अपितु एक बहुत प्रतिभाशाली, प्रभावी वक्ता भी हैं जो खुलकर अपनी बात हर मंच पर रखते हैं। संभवतया जो मीडिया कवरेज डॉ चंद्रचूड़ को मिला, वैसा किसी अन्य मुख्य न्यायाधीश को नहीं मिला। सामान्यतया सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अपने निर्णयों के माध्यम से ही जाने जाते हैं एवं सार्वजनिक समारोहों से दूर ही रहना पसंद करते हैं। डॉ चंद्रचूड़ ने न्यायाधीशों की इस छवि को तोड़ा। वे कई शनिवार, रविवार और सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश के दौरान किसी किसी न किसी श्रोता समूह को संबोधित करते दिखाई दिए। उन्होंने देश-विदेश की प्रमुख संस्थाओं, वकीलों के सम्मेलनों, विश्विद्यालयों के समारोहों में निसंकोच भाग लिया और अपना उद्बोधन दिया। उनके उद्बोधनों को मीडिया ने भी पूरा स्थान दिया। उनके लिए, नागरिक की स्वतंत्रता और संविधान प्रदत्त अन्य अधिकारों की रक्षा करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता रही है।

उन्होंने न्यायालयों के संचालन में आधुनिकतम तकनीक को लागू करने का प्रयास किया, जिसके लिए देश उन्हें सदैव याद रखेगा। वीडियो सुनवाई को उन्होंने प्रोत्साहित किया जिसके कारण वकीलों के भौतिक रूप से अनुपस्थित होने के बावजूद सुनवाई हो पाई। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने के बारे में भी उन्होंने पहल की और इसी कारण इस दिशा में अच्छी प्रगति हुई।

मीडिया में अधिक बने रहने की इच्छा के कारण ही संभव है, उनकी छवि पर विपरीत प्रभाव भी पड़ा। उदाहरण के लिए, जब प्रधानमंत्री, मुख्य न्यायाधीश के घर पर गणेश वंदना हेतु पहुंच गए और उनके द्वारा की गई आरती का मीडिया पर प्रसारण किया गया, तो उनका यह कृत्य काफी चर्चित और विवादास्पद हो गया क्योंकि अब तक किसी मुख्य न्यायाधीश ने ऐसा नहीं किया था। इससे प्रधानमंत्री से उनकी निकटता जग जाहिर हुई। इस अनावश्यक विवाद से बचा जा सकता था।

जहां तक डॉक्टर चन्द्रचूड़ के निर्णयों का प्रश्न है, इनमें से कुछ निर्णय ऐसे थे, जिसमें उन्होंने सरकार की नाराज़गी की परवाह नहीं की और उसके विरुद्ध निर्णय दिए। चंडीगढ़ मेयर के चुनाव के प्रकरण में उन्होंने सारे मतपत्रों को स्वयं अपने स्तर पर मंगवा कर उनकी गणना कराई। इसके आधार घोषित परिणाम को निरस्त करते हुए आम आदमी आपकी पार्टी के उम्मीदवार को विजयी घोषित कर दिया। हालंकि चुनाव अधिकारी अनिल मसीह के विरुद्ध कोई कड़ी कार्रवाई नहीं की गई, जबकि ऐसा किया जाना चाहिए था। इलेक्टोरल बॉन्ड प्रकरण योजना को असंवैधानिक घोषित करते हुए उसे निरस्त कर दिया। इससे सत्ताधारी दल की स्थिति अटपटी हुई। इससे सरकार के निर्णय पर प्रश्न चिन्ह लगे। किस प्रकार जिन उद्योगपतियों ने इलेक्टोरल बॉन्ड खरीदे, उन्हें कैसे लाभ पहुंचाया गया, इस बारे में कोई जांच पड़ताल करना सुप्रीम कोर्ट में उपयुक्त नहीं समझा।

हिंडेनबर्ग रिपोर्ट में अडानी ग्रुप द्वारा की गई अनियमितताओं से संबंधित प्रकरण सर्वोच्च न्यायालय में गया किंतु उसने सेबी की रिपोर्ट को सही मानते हुए उसे क्लीन चिट दे दी और कोई कार्यवाही नहीं की। यह जन धारणा के विपरीत था, क्योंकि यह मीडिया द्वारा लगभग सिद्ध कर दिया गया था कि अदानी ने अपनी शैल कंपनियों के माध्यम से अपने धन को मनी लांड्रिंग के माध्यम से निवेश किया और अपने शेयरों के दाम कृत्रिम रूप से बढ़ा दिए। इस प्रकरण को भी सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, अंतिम परिणाम तक नहीं पहुंच पाए और इस कारण यह धारणा अवश्य बनी कि कथनी और करने में अंतर तो उनमें भी था।

कुल मिलाकर, हम मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर चंद्रचूड़ के कार्यकाल को दो तरह से याद रखेंगे, एक, उनके द्वारा दिए गए साहसिक निर्णयों के कारण एवं दूसरा, उनके द्वारा दिए अनावश्यक बयानों से उत्पन्न विवादों के कारण। उन्होंने स्वयं ने कहा था कि वे यह नहीं जानते कि उन्हें भविष्य, किस प्रकार के मुख्य न्यायाधीश के रूप में याद रखेगा?

सामान्यतया, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति सार्वजनिक चर्चा का विषय नहीं बनती। डॉक्टर चंद्रचूड़ इसके अपवाद थे, क्योंकि इनके कई बयानों ने आम नागरिक के मन में यह आशा जगाई थी कि अब उसके संवैधानिक अधिकारों की रक्षा, अधिक प्रभावी रूप से हो पाएगी। उसे यह भी लगने लगा था कि कार्यपालिका की ज्यादतियों के विरुद्ध अब उसे सुरक्षा कवच, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के माध्यम से प्राप्त हो गया है। इसी प्रकार की अपेक्षाएं और आशाएं मीडिया के लगभग हर वर्ग में विस्तार से व्यक्त की गई थीं।

यह उल्लेखनीय है कि बहुत कम मुख्य न्यायाधीशों का कार्यकाल 2 वर्ष का रहा है। केवल डॉ चंद्रचूड़ के पिता वाई वी चंद्रचूड़, भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रह चुके हैं, जिनका उनका कार्यकाल 7 वर्ष से अधिक समय तक रहा। इसी प्रकार, एक और मुख्य न्यायाधीश, कपाड़िया का कार्यकाल भी 2 वर्ष से कुछ अधिक था। काफी लंबे समय बाद मुख्य न्यायाधीश का कार्यकाल दो साल रहा है।

हालांकि डॉक्टर डी वाई चंद्रचूड़ ने न्यायिक प्रक्रिया में कई सुधार के बहुत प्रयास किए। कुछ निर्णय भी ऐसे थे, जिनसे अपेक्षा और बढ़ गई थी।

उनके द्वारा सार्वजनिक वक्तव्य दिया जाना कि अयोध्या प्रकरण में जब उन्हें कोई निर्णय नहीं सूझ रहा था तो उन्होंने ईश्वर को याद किया और उसके जो निर्देश प्राप्त हुए, उसी अनुसार उन्होंने इसका निर्णय किया। किसी भी न्यायाधीश से अपेक्षा यह की जाती है कि वह केवल संविधान और कानून के अनुसार ही किसी प्रकरण का निर्णय करेंगे। यदि इसमें ईश्वर ने निर्णय पर पहुंचने में सहायता भी की थी, तो इसका सार्वजनिक प्रकटीकरण होना उचित नहीं था। लोगों का तो यहां तक कहना है कि, यदि कोई अल्पसंख्यक वर्ग का मुख्य न्यायाधीश होता, तो क्या वह खुदा के आदेश अनुसार निर्णय करता? यदि ऐसा करता तो फिर क्या स्थिति होती, इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

मुख्य न्यायाधीश द्वारा न्यायालय परिसर में न्याय की देवी के स्थान पर दूसरी मूर्ति स्थापित करना विवाद का विषय बना। उन्होंने न्याय की देवी की आंखों पर बंधी काली पट्टी हटाकर, साड़ी के परिधान में, नई मूर्ति स्थापित कराई, जिसे उनके द्वारा न्याय के खुलेपन का प्रतीक बताया गया। वास्तविकता में न्याय की देवी की आंखों पर पट्टी बांधने का अर्थ यह है कि निर्णय करते समय केवल कानून के अनुसार न्याय किया जाता है न कि किसी पक्षकार के किसी राजनीतिक दल से संबंधित होने ,गरीब अथवा अमीर होने, या किसी जाति धर्म के आधार पर। इसीलिए कानून को अंधा कहा जाता है। अब पट्टी हटाने से यह संदेश दिया जा रहा है कि न्याय भी पक्षकारों की पृष्ठभूमि एवं उनके स्टेटस को देखकर किया जाएगा? सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन ने इसका औपचारिक रूप से विरोध करते हुए संबंध में प्रस्ताव भी पारित किया है।

कुछ ऐसे प्रकरण भी आए जिसमें, राज्यपाल द्वारा महायुति की सरकार को बनाने की प्रक्रिया को गलत बताने के बावजूद भी उसे बने रहने दिया गया। राज्यपाल के इस असंवैधानिक कृत्य के बावजूद उनके विरुद्ध कोई टिप्पणियां नहीं की गई। इसी प्रकार, धारा 370 का प्रकरण बहुत समय हेतु नहीं लिया गया एवं इस कारण इसका इस पर सुनवाई लगभग अर्थहीन हो चुकी थी।

एक ओर जहां डॉक्टर चंद्रचूड़ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की पुरजोर तरीके से वकालत करते रहे, वहीं उनके द्वारा लंबे समय तक विचाराधीन प्रकरणों में, जमानत पर सुनवाई नहीं करने की बात आसानी से गले नहीं उतरती। इसी दौरान, सामाजिक कार्यकर्ता 84 वर्षीय स्टेन स्वामी की जेल में ही मृत्यु हो गई। उमर खालिद को की जमानत पर लगभग 4 वर्ष पश्चात भी कोई निर्णय नहीं हो पाया। लंबे समय तक बिना ट्रायल के राजनीतिक और सामाजिक कार्यकर्ताओं को जेल में रखा गया जिसके कारण उन्हें कई प्रकार के कष्ट भोगने पड़े। बिना ट्रायल के सामाजिक कार्यकर्ताओं को सरकारी एजेंसियों की सहायता से लंबे समय तक जेल में रखने की प्रवृत्ति की कारण कार्यपालिका पर प्रभावी अंकुश लगाने में डॉ चंद्रचूड़ सफल नहीं हो पाए।

वे 10 नवंबर को अपना पद छोड़ देंगे। उसके बाद, उनके द्वारा क्या कोई पद स्वीकार किया जाएगा अथवा नहीं इस पर सभी लोगों की नजर रहेगी। यदि उन्होंने सरकार के माध्यम से कोई नियुक्ति स्वीकार की, तो फिर उनके द्वारा कुछ दिए गए कुछ निर्णय को निश्चित रूप से संदेह की दृष्टि से देखा जाएगा। सामान्य नागरिक को इसकी संभावना कम ही लगती है क्योंकि वह स्वयं कुछ वर्षों के 'कूलिंग ऑफ पीरियड' की बात करते रहे हैं।

कुल मिलाकर, हम मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर चंद्रचूड़ के कार्यकाल को दो तरह से याद रखेंगे, एक, उनके द्वारा दिए गए साहसिक निर्णयों के कारण एवं दूसरा, उनके द्वारा दिए अनावश्यक बयानों से उत्पन्न विवादों के कारण। उन्होंने स्वयं ने कहा था कि वे यह नहीं जानते कि उन्हें भविष्य, किस प्रकार के मुख्य न्यायाधीश के रूप में याद रखेगा? डॉक्टर चंद्रचूड़ की न्यायिक विद्वता का लाभ न्यायपालिका और देश को मिलता रहे, इसकी कामना सदैव रहेगी। डॉ. चंद्रचूड़ को, सेवानिवृत्ति के अवसर पर देशवासियों की शुभकामनाएं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

सीकर : एक दशक में "जल संकट" से "जल प्रबंधन" तक

प्रेरणादायी है जल संकट से जूझते सीकर के जल प्रबंधन की यात्रा

विनोद पाठक

प्रसिद्ध डाटा वैज्ञानिक हान्ना राइट अपनी किताब नॉट द एंड ऑफ द वर्ल्ड में लिखती हैं कि यह मुमकिन है कि हम कयामत के कगार पर पहुंच गए हों, लेकिन यह भी सच है कि हम मजबूत बुनियाद पर फिर से कदम रखना शुरू कर रहे हों। वैश्विक डाटा के संदर्भ में उनकी रिसर्च बताती है कि पानी संकट को लेकर उम्मीद अभी बाकी है।

हान्ना राइट कहती हैं कि पर्यावरण से जुड़े डाटा के अनुसार पिछले करीब 10 वर्षों में सतर्कता संग आशा संकेत मिल रहे हैं। ये जरूरी नहीं है कि हम अपने लक्ष्य तक पहुंच गए हों, लेकिन लगता है कि ऐसा करने के लिए हमारे पास पर्याप्त अवसर हैं। हान्ना के बयान के संदर्भ में देखें तो भारत में पिछले दस सालों में ऐसी कई छोटी-बड़ी पहल की गई है, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव आए हैं। सीकर का उदाहरण हम सबके सामने है। कभी बूंद-बूंद पानी को तरसते सीकर ने जल प्रबंधन का एक नायाब मॉडल पूरी दुनिया के सामने रखा है।

सीकर के किसान, युवा, महिलाएं समेत बच्चों के चेहरे पर मुस्कान देखते ही बनती हैं। पानी की कमी के चलते कभी हरियाली खेतों से रूठ चुकी थी, लेकिन अब खेत न केवल लहलहा रहे हैं, बल्कि किसानों के चेहरे की मुस्कान भी लौट आई है। राजपुरा के 70 वर्षीय किसान सुवाराम से बेहतर भला कौन 'समय' के फेर को बता सकता है। सुवाराम तब और अब के फर्क को बखूबी समझते और जानते हैं। साल 1955 में जब वो इस क्षेत्र में रहने आए थे तो पानी की किल्लत थी, लेकिन आज चेक डैम्स की वजह से 20 किलोमीटर के दायरे में लहलहाती फसलें दिखती हैं। ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं जिनकी जिंदगी चेक डैम्स की वजह से बदल चुकी है।

इस बदलाव का श्रेय आनंदना-कोका-कोला इंडिया फाउंडेशन और सोशल एक्शन फॉर रुरल एडवांसमेंट (सारा) के सक्रिय सहयोग को जाता है, जिनकी वजह से शुरू चेक डैम्स सीकर में बदलाव के वाहक बने हैं। चेक डैम्स ने जल उपलब्धता और प्रबंधन में क्रांति ला दी है। ये संरचनाएं भले ही साधारण दिखाई देती हैं, लेकिन इनमें मानसून के पानी को रोकने के लिए उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। इनकी खासियत है कि ये धीरे-धीरे पूरे वर्ष भूजल को पुनर्भरित करती हैं, जिसके चलते जो कुएं पहले सूख चुके थे, अब उनमें पूरे साल पानी रहता है। क्षेत्र के जल स्तर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। चेक डैम्स ने जल सुरक्षा की नींव पर सुदृढ़ अर्थतंत्र का नया अध्याय लिखा है। जहां एक समय किसान अपने सूखे हुए खेतों को देख हर समय चिंतित रहते थे, आज वे आत्मविश्वास से अपनी विविध फसलों को उपजा रहे हैं। किसानों की आय में 80 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है। कृषि में विकास केवल दोगुना नहीं सौ गुना तक बढ़ा है। आंगनबाड़ी में काम कर रही 40 वर्षीय बजरी देवी की जिंदगी तो चेक डैम्स की वजह से बिल्कुल ही बदल गई है। अब उन्हें पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय नहीं करनी पड़ती। घर में लगे नल से पानी मिल जाता है। जल उपलब्धता ने स्थानीय निवासियों की जिंदगी के प्रत्येक पहलु को प्रभावित किया है। बच्चे अब नियमित स्कूल जा रहे हैं तो युवाओं का पलायन भी रुका है। युवा अब स्थानीय क्षेत्रों में ही रोजगार के अवसर तलाश रहे हैं। स्थानीय बाजारों की रौनक लौट आयी है। जल संसाधनों की कमी के कारण असंभव माने जाने वाले छोटे उद्योग अब उभरने लगे हैं, जो एक अधिक विविध और स्थायी स्थानीय अर्थव्यवस्था बना रहे हैं। यही नहीं नवाचार ने सीकर में जड़े जमा ली हैं। किसान पॉलीहाउस, सौर ऊर्जा से संचालित सिंचाई प्रणाली और ड्रिप सिंचाई जैसी आधुनिक तकनीक आसानी से सीकर में दिखती है।

चेक डैम्स की वजह से ज्यों-ज्यों भूजल स्तर बढ़ा है, स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनते जा रहे फ्लोराइड संदूषण में कमी आई है। यही नहीं मिट्टी की उर्वरता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है, जिससे रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में कमी आई है। स्थानीय तापमान में भी कमी आई है। सीकर में किसान जहां पहले मुश्किल से एकाध फसल उगा पाते थे, वहां वे अब चंदन के पेड़, आम और नींबू लगा रहे हैं। यह सफलता कहानी नीति निर्माताओं को महत्वपूर्ण सीख देती है। यह दिखाती है कि सतत जल प्रबंधन केवल एक पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं है, बल्कि व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन का उत्प्रेरक है।

सीकर मॉडल यह दिखाता है कि उचित निवेश परिवर्तन का वाहक बन सकता है। स्थानीय स्तर पर बड़े बदलाव का सबब बन सकता है। यह सामुदायिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करता है और पानी को एक वस्तु के बजाय समुदाय विकास के जीवनस्त्रोत के रूप में देखने की आवश्यकता पर जोर देता है। जैसे-जैसे हम भविष्य की ओर देखते हैं, सीकर के चेक डैम्स संभावनाओं के ज्वार को बढ़ाते हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि पर्यावरणीय चुनौतियों के बावजूद, नवाचारी समाधान, जो स्थिरता में निहित हैं, वे सफल हो सकते हैं। एक दशक पहले, सीकर पानी की कमी का अध्ययन था, आज, यह पुनर्जीवन की सफल कहानी सुनाता है।

समुदाय के जिन सदस्यों ने इस परिवर्तन को महसूस किया है, प्रत्यक्ष रूप से देखा है, उनके शब्दों में आभार और आशा के गहरे संदेश छिपे हैं। स्थानीय लोग जब इस पहल को जारी रखने की गुजारिश करते हैं तो वे केवल अपने लिए नहीं, बल्कि उन अनगिनत अन्य क्षेत्रों के लिए बोलते हैं जो इसी तरह के परिवर्तन की लालसा रखते हैं। सीकर की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है, लेकिन इसके परिवर्तन का पहला दशक एक सकारात्मक प्रस्तावना लिख चुका है-जो आने वाले समय में और अधिक लोगों की जिंदगी में सफल बदलावों का पर्याय बनेगा।

–विनोद पाठक,
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अजमेर रेंज के परिवादियों की वीडियो कॉलिंग के माध्यम से ई-सुनवाई होगी

दूर-दराज के परिवादी व बुजुर्ग महिला परिवादियों की वीडियो कॉलिंग के माध्यम से ई-सुनवाई की जाएगी

अजमेर, (कासं)। अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश ने सोमवार को एक नई पहल की शुरूआत की है। इस नई पहल के तहत दूर-दराज से परिवादी व बुजुर्ग महिलाए यहां कार्यालय में आने में सक्षम नहीं है, उन परिवादियों की वीडियो कॉलिंग के माध्यम से ई-सुनवाई की जाएगी और परिवादियों को राहत प्रदान की जाएगी। यह जानकारी सोमवार को अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश ने पत्रकार वार्ता में दी।

पत्रकारों से वार्ता करते हुए डीआईजी ओमप्रकाश ने बताया कि यह ई-सुनवाई का कार्यकम प्रत्येक माह के प्रथम व अंतिम शुकवार को होगा और रेंज के लोगों को इसका

अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश ने प्रेसवार्ता की।

अधिक से अधिक से लाभ मिले इसके बारे में व्यापक प्रचार -प्रसार किया जाएगा। महीने में दो दिन ई-सुनवाई की सुविधा उपलब्ध करवाई

- **अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश ने नई पहल की शुरूआत की, माह में दो बार होगी सुनवाई**

गई है। सोमवार को अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश और एडिशनल एसपी विजय सांखला के द्वारा नंबर जारी किया गया। सुनवाई के लिए रेंज कार्यालय से व्हाट्सएप नंबर 8764853020 नंबर जारी किया गया है। इस नंबर पर रेंज के जो भी परिवादी है वह अपनी शिकायत भेज सकेंगे। इसके बाद रेंज कार्यालय का अधिकारी उस परिवादी से उसके इच्छित स्थान और समय को देखते हुए वीडियो कॉलिंग के माध्यम से जोड़ा जाएगा। जिसमें संबंधित थाना अधिकारी और सीओ को भी शामिल होंगे। परिवादियों को दूर दराज से कार्यालय पर नहीं आना पड़े इसे लेकर उन्हें राहत देने के लिए यह सुविधा जारी की गई है।

डीआईजी ने बताया कि कुछ समय में कई परिवर्दियों के शिकायत पर सुनवाई नहीं होने की शिकायत भी मिली थी, जिसको ध्यान में रखते हुए रेंज के 7 थाना अधिकारियों को नोटिस भी जारी किए गए। साथ ही बेहतर काम करने वाले थाना अधिकारियों को प्रोत्साहित पत्र भी दिया गया है।

पाकिस्तान से भारतीय सीमा में एक बार फिर गुब्बारा पहुंचा

बीकानेर, (निसं)। पाकिस्तान से भारतीय सीमा में घुसकर जासूसी करने के लिए एक बार फिर गुब्बारा भारतीय सीमा में पहुंचा। स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी लेकिन विलंब से पुलिस पहुंची, उससे पहले ही गुब्बारा वापस उड़कर पाकिस्तान की सीमा में चला गया। अब इस गुब्बारा में किसी तरह की मशीनरी लगी थी या नहीं? इस बारे में स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी।

जानकारी के अनुसार भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर ये गुब्बारा सोमवार सुबह देखा गया।

उर्दू में पाक लिखा गुब्बारा पाकिस्तान की और से आसमान में उड़कर आया था। खिलोने रुपी इस गुब्बारे के ऊपर इंग्लिश में कुछ लिखा था

- **स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना दी लेकिन विलंब से पुलिस पहुंची**
- **उससे पहले ही गुब्बारा वापस उड़कर पाकिस्तान की सीमा में चला गया**

और कुछ उर्दू में भी लिखा था। खाजूवाला उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत 17 केवाईडी के चक 20 केवाईडी में भलजी जाट के खेत में 2 घंटे तक गुब्बारा अटका रहा। मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गई। ग्रामीणों ने 17 केवाईडी सरपंच प्रतिनिधि ने सुरेंद्र सींवर को अवगत करवाया। सींवर ने मौके पर पहुंचकर पुलिस को सूचना दी। सींवर का कहना है कि पुलिस का इंतजार करते रहें किसी ने गुब्बारे को हाथ नहीं लगाया। पुलिस को सूचना देने के एक घंटे बाद पुलिस पहुंची। तब तक गुब्बारा वापस उड़ गया और पाकिस्तानी सीमा में पहुंच गया। स्थानीय लोगों का कहना है कि किसी ने भी गुब्बारे के हाथ नहीं लगाया। हवा का तेज झोंका आने से वह गुब्बारा फिर आसमान की तरफ उड़ा और पाकिस्तान पहुंच गया। खाजूवाला थानाधिकारी बलवंत कुमार का कहना है कि हमें सूचना मिली थी। एक टीम को मौके के लिए तुरंत रवाना किया गया।

"सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की प्रगति" की थीम पर गतिविधियां हुई

अजमेर, (कासं)। अजमेर मण्डल पर मनाये जा रहे सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2024 के अंतर्गत "सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की प्रगति" की थीम पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई। इसी कड़ी मे सोमवार को मण्डल रेल प्रबंधक कार्यालय अजमेर के सभा कक्ष में सतर्कता जागरूकता पर सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के मुख्य अतिथि उत्तर-पश्चिम रेलवे के मुख्य सतर्कता अधिकारी एवं वरिष्ठ उप महाप्रबंधक अनिल कुमार गुप्ता ने रेलवे में सतर्कता विभाग की भूमिका एवं उनकी कार्यप्रणाली पर विस्तृत प्रकाश डाला एवं मण्डल पर पूर्ण सत्यनिष्ठा से कार्य करने का आव्हान किया।

मुख्यालय से आई सतर्कता विभाग की टीम में मुख्य सतर्कता अधिकारी, एस एण्ड एम मनोज कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, ई एण्ड एस टी ए अंसारी, मुख्य सतर्कता अधिकारी, कार्मिक सुरेन्द्र सिंह बारहट, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी इंजी सत्यनारायण यादव, उप मुख्य सतर्कता अधिकारी/लेखा अरविन्द कुमार द्वारा प्रजेन्टेशन के माध्यम से केस स्टडी प्रस्तुत की गई। सेमिनार में उपस्थित अधिकारियों ने अपने अपने विभागों की कार्य प्रणाली में सतर्कता व पारदर्शिता संबंधित सवाल जवाब किए और सुझाव भी दिए। इस अवसर पर मण्डल रेल प्रबंधक आलोक अग्रवाल, अपर मण्डल रेल प्रबंधक बलदेव राम, वरि मण्डल कार्मिक अधिकारी रघुवीर सिंह चारण सहित मण्डल के अन्य अधिकारी एवं प्रभावी पर्यवेक्षक उपस्थित रहे।

राशिफल मंगलवार 5 अक्टूबर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, चतुरथी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, ज्येष्ठा नक्षत्र प्रात: 9:45 तक, अतिगंड योग दिन 11:27 तक, वणिज करण दिन 11:51 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 9:45 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

रवियोग प्रात: 9:45 तक है। कुमार योग रात्रि 12:17 से आरम्भ होगा। आज भद्रा दिन 11:15 से रात्रि 12:17 तक है। आज अंगारक विनायक चतुरथी, दुर्वा गणपति व्रत है। आज से डाला छठ पर्व तीन दिन का आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:27 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 1:32 तक, शुभ 2:54 से 4:16 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:43, सूर्यास्त 5:37

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

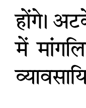

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। मित्रों/रिश्तेदारों से अनबन हो सकती है। आज बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

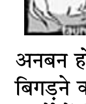

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक कार्यों में संयम रखना ठीक रहेगा।

सिंह

नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

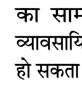

कन्या

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

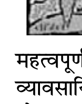

तुला

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

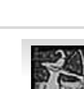

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

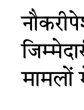

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

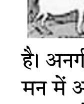

कुंभ

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।